Printed Pages—4

3 (Sem–6) HIN M 5

2015

HINDI

(Major)

Paper : 6.5

(Pradeshik Sahitya : Asamiya)

Full Marks : 60

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

Answer either *in Assamese (Devanagari script)* or *in Hindi*

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×7=7

(क) असमिया भाषा का उद्‌भव किस अपभ्रंश से हुआ है?

(ख) शंकरदेव के कुल कितने अंकिया नाटक हैं?

(ग) सिद्धों के भीतर किसको कामरूप का निवासी माना जाता है?

(घ) असमिया भाषा के प्रथम कोषकार का नाम क्या है?

(ङ) असमिया रोमांटिक युग का प्रारम्भ किन गीतों से माना जाता है?

(च) 'बीण बरागी' कविता की मूल संवेदना क्या है?

(छ) असम साहित्य सभा का प्रथम अधिवेशन कब हुआ था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : 2×4=8

(क) असम के दो पुराने नामों का उल्लेख कीजिए।

(ख) बरगीत की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) भवेन्द्रनाथ शइकीया की पहली कहानी 'पथ-निरूपण' कब, किस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी?

(घ) स्नेह देवी का पहला कविता-संग्रह 'सौरभज्योति' कब, किस पत्रिका में प्रकाशित हुआ था?

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×3=15

(क) असमिया भाषा के विकास में क्रिश्चियन पादरियों के योगदान पर प्रकाश डालिए।

(ख) बरगीत का अर्थ स्पष्ट करते हुए बरगीतों के वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए।

(ग) पत्रकारिता में पद्मनाथ गोहाञि बरुवा की देन पर एक लेख लिखिए।

(घ) रामधेनुयुगीन एक प्रमुख कथाकार का परिचय दीजिए।

(ङ) 'विचित्र' कहानी की काबेरी का मनोविश्लेषण कीजिए।

(च) डॉ० सूर्यकुमार भूञा की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) शंकरदेव और माधवदेव के बरगीतों का तुलनात्मक परिचय दीजिए।

अथवा

असमिया भाषा के उद्‌भव और विकास पर एक लेख लिखिए।

(ख) असमिया साहित्य के युग-निर्माता के रूप में 'यतीन्द्रनाथ दुवरा' का परिचय दीजिए।

अथवा

कहानी-लेखिका के रूप में स्नेह देवी के व्यक्तित्व का आभास दीजिए।

अथवा

आलोचक के रूप में डॉ० वाणीकान्त काकति का परिचय दीजिए।

(ग) सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×2=10

(i) धन्य धन्य कलिकाल धन्य नरतनु भाल
धन्य धन्य भारत बरिषे।
तप जय यज्ञ तेजि तोमार चरणे भजि
तुवा नाम धूषिओ हरिषे॥

अथवा

ईष स्वरूपे हरि सब घटे बैठह
जैचन गगन बियापि।
निन्दावाद पैषुन्य हिंसा हरि
तेरि करोहो हामु पापी॥

(ii) आकुल उदास सुरे उठिब जगत जूरि
गंभीर वेदना राशि अन्तर माजर,
नेलागे चेनेह कारो निविचारो हुमुनिया
सागरेते मार याय ढो सागरर।।

अथवा

निरब, निश्चल मि० पियेनारर मुखखन टुपीर छाँत अन्धकार होइये आछिल। कबलइ तेओं कथा विचारि पोवा नाछिल।

☆ ☆ ☆